राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, मोलोड़ी

रुड़मल गुर्जर, शिक्षक

आरम्भिक स्थितियाँ : कक्षा–कक्ष का स्वरूप –

- इस विद्यालय में कुल 6 शिक्षक कार्यरत थे। इन सभी शिक्षकों की कक्षा के शिक्षक निर्देश देते थे और बच्चों से आज्ञापालन व अनुशासन की अपेक्षा करते थे।
- शिक्षक द्वारा पढ़ाने के दौरान बच्चों को सिर्फ सुनना होता है।
- शिक्षक पूर्णतः पुस्तक केन्द्रित परम्परागत श्यामपट्ट शिक्षण कराते थे।
- कभी–कभी एक बालक–बालिका जोर–जोर से पढ़ती हुई मिली व शेष बच्चे सुनते हुए।
- बच्चे पाठ्यपुस्तक में दी गई जानकारियों को रटते रहते हैं।
- पूर्णतः कक्षा में शिक्षक का नियंत्रण रहता था। बच्चों की भागीदारी बहुत कम होत थी।
- किन्हीं 5–7 बच्चों के साथ शिक्षक अपने कार्यों को आगे बढ़ाता हुआ चलता था।
- अधिकांश समय कक्षाएँ खाली रहती थी।
- बच्चों की बैठक व्यवस्था पहले से तय होती थी एवं इनमें परिवर्तन की अनुमति नहीं होती थी।
- सामग्री केवल प्रदर्शन के लिए होती थी।
- कक्षा का माहौल उबाऊ होता था।
- समय सारणी में लचीलेपन का अभाव होता था।
- प्रत्येक बालक का सीखना सुनिश्चित नहीं होता था।
- शिक्षक की सोच स्वयं को ज्ञान का दाता मानने जैसी थी वह सोचता था कि बच्चे स्वयं नहीं सीख सकते हैं।
- मूल्यांकन कुछ विषयवस्तु एवं गिन–चुने प्रश्नों द्वारा होता था।
- मूल्यांकन का आगामी योजना में किसी प्रकार की भूमिका नहीं होती थी।
- बाल सभा में सिर्फ प्रार्थना की जाती थी जो भी किन्हीं दो–चार बालकों द्वारा।
- पुस्तकें अलमारी में बन्द थी उनका कोई उपयोग नहीं हो पा रहा था।

किए गए प्रयास :

- इन सभी स्थितियों का विश्लेषण करते हुए त्रिस्तरीय योजना का निर्माण कर कार्य किया गया। ये त्रिस्तरीय व्यवस्था –
  - **पहला –** मेरे द्वारा विद्यालय में समय देकर चर्चा करना।
    - कक्षा–कक्ष में अनुभव प्रदान करना।
    - कक्षा अवलोकन कर उचित दिशा–निर्देश देना।
  - **दूसरा –** कार्यशालाएँ (मासिक) – इन कार्यशालाओं के जरिए सैद्धान्तिक समझ (सीसीई) बनाने पर कार्य किया गया।

किए गए बदलाव :

- **सभा–सत्र** – प्रार्थना के साथ–साथ प्रेरक प्रसंग बालगीत, कविता भी कराने हैं और सभी बच्चों को मौका दिया जाता है।
- **कक्षा–कक्ष** – प्रत्येक बालक के स्तर का निर्धारण हो पाया है।
- प्रक्रिया के दौरान बच्चों को भी शामिल किया जाने लगा है।
- कमजोर बच्चों की तरफ विशेष ध्यान दिया जाने लगा है।
- गतिविधि के अनुसार बैठने की व्यवस्था में परिवर्तन होता रहता है।
- किसी भी व्यक्ति के बाहर से आने पर बच्चों के लिए व्यवधान उपस्थित नहीं होता है।
- पुस्तकालय की पुस्तकें घर के लिए इश्यू की जाती हैं एवं इन पर बातचीत की जाती है।
- सीसीई के प्रति सकारात्मक सोच बनी है एवं दस्तावेज़ीकरण पूर्ण है।
- समय सारणी में थोड़ा लचिलापन दिखाई देता है।
- पाक्षिक उद्देश्यों का चयन पूर्व में करते हैं एवं बीच–बीच में अपनी योजना में बदलाव करते हैं।

चुनौतियाँ :

- सीसीई की प्रक्रिया में चैकलिस्ट में दर्ज़ अवलोकन आगामी योजना में भागीदार न बनना चुनौती है।
- शिक्षण प्रक्रिया के दौरान चैकलिस्ट में आकलन दर्ज़ करना चुनौती बना हुआ है।
- योजना तैयारी के लिए अतिरिक्त समय न देना एक चुनौती है।
- पर्याप्त शिक्षण सामग्री के लिए बजट की चुनौती रही है।
- प्रत्येक बच्चे का मददगार हो शिक्षक यह भी एक चुनौती है।
- खेल व संगीत को शामिल करना चुनौती है।
- अंग्रेजी शिक्षण करवाना एक चुनौती है क्योंकि बच्चों का स्तर इन पाठ्यपुस्तकों पर कार्य के लायक नहीं है।